हिंदी में अनुदित कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन

डॉ. विनायक बापू कुरणे
अध्यक्ष हिंदी विभाग
बाळासाहेब देसाई कॉलेज,
पाटण जि. सातारा
मोबा. नं.9604749881
ई-मेल-kuranevinayak@rediffmail.com

शोध आलेख का सारांश :-

देश के चुनिंदा आदिवासी कवियों का 'लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ' यह हिंदी में अनुदित काव्य संग्रह है l जिसका संपादन वंदना टेटे ने किया है l यह कविताएँ आदिवासी जीवन पर आधारित है l वैश्वीकरण एवं आधुनिकरण ने आदिवासी जीवन में कई समस्याओं का निर्माण हुआ है जिसका चित्रण कवियों ने किया है l आदिवासियों को जंगल से खदेडने के लिए षड्यंत्रों से उन्हे घेरा जा रहा है l विकास के नए मॉडल्स का सपना दिखाकर उन्हें बेघर किया जा रहा है l आदिवासियों के जीवन में इलेक्ट्रोनिक मध्यामों का प्रवेश होने के कारण उनकी नई पिढी पारंपारिक ज्ञान, देशी तकनीक आदि बातों से वंचित रह रही है l आलोच्य कविताओं के माध्यम से इन बातों का अनुशीलन किया है l

बीज शब्द :- आदिवासी जनजाति, आधार तत्व, अखडा, जंगलों की कटाई, षड्यंत्र, पारंपारिक ज्ञान l

प्रस्तावना :-

आदिवासी देश के मूलनिवासी हैं। जुगुल किशोर चौधरी लिखते है, "आदिवासी राष्ट्र का पारस्परिक संबंध और व्यवहार करने के बारे में पूर्वानुभाव पर आधारित निश्चित नियमों का पालन करने वाले पारिवारिक समूह आदिवासी जाति है।"[1] वे अपनी विशिष्ट समाज व्यवस्था को कायम रखने वाले समूह हैं जिनमें अपनी स्वतंत्र संस्कृति है, दर्शन , इतिहास और विरासत है। साथ ही इन सभी को अभिव्यक्त करने के लिए उनके पास अपनी मातृभाषाएँ हैं। जुगुल किशोर चौधरी लिखते है ''भारत देश में आदिवासी जनजातियों में प्रमुख रूप में ये हैं- नट, करनट, गोंड, भील, उराव, कातकारी, कोल, बारली, संथाल, हो, बागा, चेंचू, बंजारा, मिझो, नागा, गुर्जर, खांसीकोली, दोबी, जुआंग, लिंबू, अबोर, मिरी, मिशमी, मीकिर, कवारी,गारी, कुकी, लुशाई, चकमा, मूमिज, बिरहोर, खोंड,सवरा, कोकर, कमार, मीणा, कटकरी कोंडा, रेड्डी, राजगोंड, कोया, कोलाम, कुरूंबा, टोडा, काडर, मलायन, मुशुवन, कनिक्कर, सहरिया, गरासिया, पावरा, रावताला, राठवा पाडवी, गवित, बलवी, माचवी, मुसहर आदि।" [2] आदिवासी के जीवन का आधार जंगल है। जंगल ही उनकी धरोहर है। जंगल उन्हें सब कुछ देता है। जंगल से अलग उनकी कोई जीवन शैली नहीं है।

शोध विषय का विश्लेषण :-

देश के चुनिंदा आदिवासी कवियों का 'लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ ' यह हिंदी में अनुदित काव्य संग्रह है l जिसका संपादन आदिवासी और देशज साहित्यिक-सांस्कृतिक संगठन 'झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखडा' की संस्थापक , महासचिव वंदना टेटे ने किया है l इस संग्रह में दुलाय चंद्र मंडा, तेमसुला आओ, प्रेस कुजूर, वाहरू सोनवणे, रामदयाल मुंडा, उज्ज्वला ज्योति तिग्गा, महादेव टोप्पो, इरोम चानू शर्मिला, हरिराम मीणा, कमल कुमार तांती, निर्मला पुतुल, अनुज लुगुन, वंदना टेटे और जनार्दन गोंड आदि आदिवासी कवियों की कविताओं का हिंदी में अनुवाद संकलन है l

राष्ट्रहित और राष्ट्र के विकास के नाम पर सार्वजनिक प्रतिष्ठानों, खदानों, बड़े बाँधों आदि के,लिए आदिवासियों की ज़मीन का अधिग्रण हुआ। इससे आदिवासी जल, जंगल और ज़मीन से विच्छिन्न हो गये l आदिवासी जीवन के ये आधार तत्व है l इनसे दूर होकर जीवन जीने के लिए विवश लोगों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। उनके जीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया। जंगल की सारी चीजें इनकी आजीविका के प्रमुख साधन है परंतु वन संरक्षण अधिनियम के कारण इन साधनों से वे वंचित रह गए हैं। उन्हें रोजगार के अन्य साधन ढूंढने पडते है l मुंडारी के लोकप्रिय कवि दुलाय चंद्र मुंडा लिखते है '

"गाँव-गाँव, टोले-टोले से, /हमारे भाई-बहिन सब चले गए।
हटिया में काम खुल गया, /जोतना-कोड़ना तक को छोड़ गए।"[3]

पारंपारिक काम को छोडकर नागरी बस्ती में रोजगार पाने के लिए गाँव-गाँव, टोले-टोले से आदिवासी जाते है l आदिवासियों के आजीविका के प्रमुख साधनोंपर पाबंदी लगाने के कारण जीने-मरने का प्रश्न उनके सामने निर्माण हो गया है l कवि आगे लिखते है ,

"हे पंडुक!/ हम दोनों भी इसी में जल मर जाएँ,

हम दोनों कहाँ चारा-पानी ढूंढेगे ?/हे बुध्दु !
इसी धारा में समा जाएँ, /हम दोनों कहाँ गुजर-बसर करेंगे ?" [4]

आदिवासियों का सामुदायिक सांस्कृतिक स्थल जिसे 'अखडा' कहा जाता है l रात के समय थके-भागे आदिवासी स्त्री-पुरुष इस अखडे में गीत गाते हुए नृत्य करते थे l आज कोयला खदानों के बहाने, औद्योगिक इकाइयों लगवाने हेतु या जंगल संरक्षण हेतु आदिवासी बस्तियों को उजाडा गया है l उनका जीवन तहस-नहस हो गया है l उनका सांस्कृतिक स्थल अखडा भी नष्ट हो गया है l कवि ग्रेस कुजूर कहते है,

"अब कहाँ है वह अखड़ा ? /किसने उगाए हैं वहाँ विषैले नागफनी
बार-बार उलझता है जहाँ / तुम्हारी 'तोलोंग' का फुदना'
क्यों उदास है आज 'पत्वा' के उजले पंख ?/ हवा में नहीं तैरते अब
'आँगनई' और 'डमकच' के गीत/ सिल गए हैं होंठ मेरे
धतूरे के काँटों से" [5]

आदिवासियों का जीवन जल, जंगल, जमीन के बीना निरर्थक है l उद्योग या आवास निर्माण के कारण या फिर बाँध आदि सार्वजनिक हितों की पूर्ति के कारण जंगलों की कटाई होती रहती है। इसलिए जंगलों का क्षेत्र कम होता जा रहा है। वहाँ औद्योगिक इकाइयों के लगने से आदिवासियों की करंज तेल की ढिबरी की जगह थर्मल पावर के बत्तियों ने ली है l

"थर्मल पावर के दूधिया प्रकाश/ और
जादूगोड़ा के जादुई चिराग तले /करंज तेल की ढिबरी लिये
मन के किस अँधेरे में/ भटक रहे हो संगी?
जल, जंगल, जमीन के बिना/ साल वन के जीवन का व्याकरण
किन पंडितों के हाथों/ तुमने गिरवी रखा है संगी ?
कोटरों से निकल अपने/ साल वन के सुग्गे भी
पूछ रहे हैं/ अपने होने का पता ।" [6]

आदिवासी जंगल को सुरक्षित रखने के पक्ष में है। वे जंगल को पालते हैं और जंगल उन्हें भी। इस पारस्परिक रिश्ते को तोडते हुए वर्तमान संदर्भ में आदिवासियों को जंगल से निकाल देने का षड्यंत्र चल रहा है । उन्हें अपना संरक्षण करने के बहाने उनके हाथ में बंदूक थमा दी है l वे अपना संरक्षण करने के लिए गोलियाँ चलाते है l पुलिस की हत्या करते है l तब उन्हें नक्सलवादी घोषित किया जाता है l आदिवासी युवक हाथ में बंदूक लिए दर-दर भटक रहे हैं l उन्हें पुलिस की गोलियों का शिकार होना पडता है l कवि वाहरू सोनवणे लिखते है ,

"माँ, पुलिस मुझे मार डालेगी /इसलिए तू डर गई ?
मुझे बंदूक ही मार देगी/ ऐसी तो बात नहीं है, माँ !
जान लेनेवाले तो चारों तरफ हैं/ घर के भीतर-बाहर, सगे-संबंधी, माँ-बाप
सभी का मन तो ऐसा ही है /जब वे ऐसी बातें करते हैं, तो
वे भी मुझे जान से मारनेवाले ही लगते हैं /
मौत के खौफ से कब तक छिपता फिरूँ ? /
जान में जान है जब तक/
लड़नी ही पड़ेगी इनसानियत की लड़ाई" [7]

आदिवासी जंगल का आदमी है l वह जंगल की पूजा करता है l उसके लिए वृक्ष लगाना पुण्य का काम है l वृक्ष को काटना उसके लिए पाप है l वह घास-फूस की झोपडियों में रहेगा लेकिन वृक्षों को नहीं काटेगा l रामदयाल मुंडा आदिवासी की इस विशेषता को चित्रित करते हुए लिखते है ,

"मेरे ही सामने उस दिन ठेकेदार साहब ने / नागों की झोंपड़ी को देखकर
अपने इंजीनियर साथी से कहा था- /"बेवकूफ हैं साले, टिंबर से घिरे हैं पर
ढंग का मकान बनाने की भी अक्ल नहीं आई।"[8]

आदिवासी जानता है जंगल को नष्ट करना खुद को नष्ट करना है l लेकिन कुछ लोग अपने फायदे के लिए वृक्षों को काट रहे है l

"वह जानता है कि जंगल को नष्ट करना/ खुद को नष्ट करना है । इसीलिए जंगल का आदमी मेरी पूजा करता है ।/ यहाँ तो बाहर से "वृक्ष लगाएँ, पुण्य कमाएँ"/ और भीतर से "वृक्ष काटें, पैसा लूटें"/ वाली नीति बरती जा रही है ।" [9]

कोयला खदानों के बहाने, औद्योगिक इकाइयों लगवाने हेतु या विश्वस्तरीय उद्यान आदि के लिए आदिवासियों की जमीन हडपने के लिए, उन्हें जंगल से निष्कासित करने के लिए कई टोलियाँ कार्यरत है l उन्हें समझाने, फुसलाने के लिए बताया जाता है कि औरों की तरह जीने का तुम्हें जन्मसिद्ध हक्क है l विकास के नये मॉडेल का सपना दिखाते है l और समझाया जाता है कि इस विकास से आने वाली अनगिनत पिढियाँ बैठकर खायेगी l कवि इस षड्यंत्र का चित्रण करते हुए लिखते है,

"विकास के नए मॉडल्स के रूप में/दिखाते हैं सब्जबाग कि
कैसे पुराने जर्जर जंगल / का भी हो सकता है कायाकल्प
कि एक कोने में पड़े/ सुनसान उपेक्षित जंगल भी
बन सकते हैं /विश्व स्तरीय वन्य उद्यान
जहाँ पर होगी /विश्व स्तरीय सुविधाओं की टीम-टाम
और रहेगी विदेशी पर्यटकों की रेल-पेल / और कि कैसे घर बैठे खाएगी
शेर, हाथी और भालू की / अनगिन पुश्तें"[10]

बॉस को लेकर समाज में कई अवधारणाएँ हैं l गैर आदिवासी बॉस को जलाना हानिकारक समझते है l आदिवासी के जीवन में बॉस को महत्वपूर्ण स्थान है l आदिवासी बॉस से टोपियाँ , टोकरी, तिनके, मछली पकडने के साधन आदि वस्तुएँ बनाते है l बॉस आदिवासी के जीवन का अभिन्न अंग होने के कारण उसे लेकर कई मुहावरे भी गढे हुए है l कवयित्री निर्मला पुतुल लिखती है,

"बॉस को लेकर कई अवधारणाएँ हैं
आदिवासियों की कुछ और गैर-आदिवासियों की कुछ
चूँकि बाँस के संबंध में आदिवासियों की धारणा
सबसे महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय है।
बाँस को लेकर कई मुहावरे हैं
जिसमें एक मुहावरा किसी को बाँस करना है
जो इन दिनों सर्वाधिक चर्चित मुहावरा है।"[11]

वैश्वीकरण एवं आधुनिकरण ने आदिवासी जीवन का नागरीकरण हो गया है l आदिवासियों के बच्चे उनके पारंपारिक ज्ञान से दूर रह गये है l खुली हवा की जगह बंद कमरे में टी. वी., कंप्यूटर , नेट की दुनिया में बच्चे मशगुल हो गये है l रिमोट , माउस और मोबाइल के बटनों पर उनकी उंगलियाँ थिरक रही है l कवयित्री वंदना टेटे लिखती है,

"बंद कमरे में,/ आँखें खोलते ही/ टी.वी., कंप्यूटर, नेट की दुनिया में
वायर के जरिए आती सूचनाओं/ और रंगीनियों के अभ्यस्त होते
मेरे बच्चों की उँगलियाँ/ रिमोट, माउस और मोबाइल के बटनों पर
खेलती-नाचती-थिरकती हैं।/ और बंद कमरे में सारे मौसम /गुजर जाते हैं।" [12]

कवयित्री वंदना टेटे को चिंता है कि बच्चे नहीं जान पायेंगे कि पहली तेज बारीश का पानी जब सूखी नदी में उतरता है तो अपने आने की सूचना कैसे देता है ? डोरी, कुसुम से तेल निकालने की , मछली और चिडिया पकडने की देशी तकनीक आदि बातों से वंचित रह जायेंगे l

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विभिन्न आदिवासी भाषाओं से हिंदी में अनुदित कविताओं में आदिवासी जीवन अभिव्यक्त हुआ है l वैश्वीकरण एवं आधुनिकरण ने आदिवासी जीवन में कई समस्याओं का निर्माण हुआ है जिसका चित्रण कवियों ने किया है l आदिवासियों को जंगल से खदेडने के लिए षड्यंत्रों से उन्हे घेरा जा रहा है l विकास के नए मॉडल्स का सपना दिखाकर उन्हें बेघर किया जा रहा है l आदिवासियों के जीवन में इलेक्ट्रोनिक मध्यामों का प्रवेश होने के कारण उनकी नई पिढी पारंपारिक ज्ञान, देशी तकनीक आदि बातों से वंचित रह रही है l आदिवासियों के इन सारी बातों का यथार्थ चित्रण आलोच्य कविताओं में हुआ है l

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. जुगुल किशोर चौधरी- आदिवासी विमर्श, अर्थ और अवधारणा लेख से, युद्धरत आम आदमी, 2018 पृ. 82
2. जुगुल किशोर चौधरी- आदिवासी विमर्श, अर्थ और अवधारणा लेख से, युद्धरत आम आदमी, 2018 पृ. 81
3. लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ (दुलाय चंद्र मुंडा- कोडना भारी हो गया)– सं. वंदना टेटे प्रभात प्रकाशन, दिल्ली सं. 2017 पृ.18
4. लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ (दुलाय चंद्र मुंडा- हम लोग कहाँ गुजर-बसर करेंगे)– सं. वंदना टेटे प्रभात प्रकाशन, दिल्ली सं. 2017 पृ.19
5. लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ (ग्रेस कुजूर-एक और जनी शिकार)– सं. वंदना टेटे प्रभात प्रकाशन, दिल्ली सं. 2017 पृ.33
6. लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ (ग्रेस कुजूर-प्रतीक्षा)– सं. वंदना टेटे प्रभात प्रकाशन, दिल्ली सं. 2017 पृ.41-42
7. लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ (वाहरू सोनवणे- माँ, पहली लडाई तो हमारे ही बीच है)– सं. वंदना टेटे प्रभात प्रकाशन, दिल्ली सं. 2017 पृ.45
8. लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ (रामदयाल मुंडा-कथन शालवन के अंतिम शाल का)– सं. वंदना टेटे प्रभात प्रकाशन, दिल्ली सं. 2017 पृ.59-60
9. वही पृ. 61
10. लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ (उज्ज्वला ज्योति तिग्गा- शिकारी दल अब आते है)– सं. वंदना टेटे प्रभात प्रकाशन, दिल्ली सं. 2017 पृ. 91
11. लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ (निर्मला पुतुल- बाँस)– सं. वंदना टेटे प्रभात प्रकाशन, दिल्ली सं. 2017 पृ.160
12. लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ (वंदना टेटे- हमारे बच्चे नहीं जानते, तोतो-रे नोना-रे)– सं. वंदना टेटे प्रभात प्रकाशन, दिल्ली सं. 2017 पृ. 190